Golden Research Thoughts
Vol -2 , ISSUE –6, Dec 2012
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

हिंदी साहित्य की स्त्री आत्मकथाओं में नारी विमर्श

प्रा. सिंधू खिलारे
हिंदी विभाग, उमा महाविद्यालय, पंढरपुर, जिला : सोलापुर .

शोधसार-

साहित्य में आत्मकथा लेखन का उद्देश्य केवल जीवन की घटनाओं का ब्यौरा देना नहीं होता, बल्कि यह अपने समय के समाज, संस्कृति और विचारधारा का जीवंत दस्तावेज़ होता है। हिंदी साहित्य में लंबे समय तक आत्मकथाएं पुरुषों द्वारा लिखी गईं, जिनमें उनकी उपलब्धियों और सार्वजनिक जीवन का महिमामंडन अधिक था। इसके विपरीत, जब स्त्रियों ने अपनी आत्मकथाएं लिखनी शुरू कीं, तो उन्होंने घर की चारदीवारी, रसोई, शयनकक्ष और समाज में व्याप्त दोहरे मापदंडों की पोल खोल दी।

प्रस्तावना-

स्त्री का जीवन सदियों से मौन और सहनशीलता का पर्याय माना जाता रहा है। साहित्य में भी स्त्री को प्रायः पुरुष लेखकों ने अपनी दृष्टि से गढ़ा—कभी देवी बनाकर, तो कभी कुलटा कहकर। लेकिन जब स्त्री ने स्वयं कलम उठाई और अपनी आत्मकथा लिखी, तो उसने अपने भोगे हुए यथार्थ को बिना किसी लाग-लपेट के प्रस्तुत किया। स्त्री आत्मकथाओं में नारी विमर्श दरअसल 'मौन के टूटने' का विमर्श है। यह अपने हिस्से का सच खुद कहने का साहस है, जहाँ वह अपनी कमजोरियों, इच्छाओं, और सामाजिक वर्जनाओं से टकराने की कहानी खुलकर बयान करती है।

1) स्त्री आत्मकथाओं में नारी विमर्श के प्रमुख आयाम:-

हिंदी की प्रमुख स्त्री आत्मकथाओं के अध्ययन से नारी विमर्श के निम्नलिखित स्वर स्पष्ट रूप से उभरते हैं:

क. पितृसत्तात्मक व्यवस्था का पर्दाफाश

स्त्रियों ने अपनी आत्मकथाओं में परिवार नाम की उस संस्था के छद्म को उजागर किया है, जो बाहर से आदर्श दिखती है लेकिन भीतर से स्त्री का दमन करती है।

मन्नू भंडारी अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में स्पष्ट करती हैं कि कैसे एक पढ़ी-लिखी और स्वावलंबी स्त्री को भी अपने पति (राजेंद्र यादव) के अहम और पितृसत्तात्मक सोच से जूझना पड़ता है।

ख. देह विमर्श और यौन शुचिता का खंडन

पुरुषवादी समाज ने स्त्री की देह को 'इज्जत' से जोड़कर उसे हमेशा नियंत्रण में रखा। स्त्री आत्मकथाओं ने इस धारणा को ध्वस्त किया।

प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' इसका सबसे साहसिक उदाहरण है। एक सफल व्यवसायी होने के बावजूद, डॉ. सर्राफ के साथ अपने विवाहेतर संबंधों को उन्होंने जिस बेबाकी से स्वीकारा है, वह समाज की तथाकथित नैतिकता को खुली चुनौती है। इसमें वे अपनी देह की इच्छाओं और भावनात्मक कमज़ोरियों को बिना किसी अपराधबोध के रखती हैं।

ग. अस्मिता और स्वतंत्र पहचान का संकट

स्त्री जीवन भर किसी की बेटी, पत्नी या माँ बनकर रह जाती है।

मैत्रेयी पुष्पा अपनी दो भागों में रचित आत्मकथा—'कस्तूरी कुंडल बसै' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया'—में एक ग्रामीण स्त्री के शहर तक पहुँचने और लेखिका बनने के कड़े संघर्ष को दर्ज करती हैं। वे लिखती हैं कि स्त्री की सबसे बड़ी लड़ाई अपने लिए एक 'स्वतंत्र स्पेस' खोजने की है।

घ. स्त्री विद्रोह और 'आपहुदरी'पन

नारी विमर्श का एक बड़ा हिस्सा समाज द्वारा तय किए गए नियमों को तोड़ने का है।

रमणिका गुप्ता की आत्मकथा 'आपहुदरी: एक ज़िद्दी लड़की की आत्मकथा' स्त्री विमर्श का एक उग्र रूप है। वे अपने राजनीतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन (जिसमें उनके कई प्रेम संबंध भी शामिल हैं) को अत्यंत निर्ममता और ईमानदारी से सामने रखती हैं। यहाँ स्त्री किसी की दया की पात्र नहीं, बल्कि अपने जीवन के फैसले खुद करने वाली 'आपहुदरी' (मनमानी करने वाली) है।

2). दलित स्त्री आत्मकथाओं का विशिष्ट स्वर: 'दोहरा अभिशाप':-

नारी विमर्श तब तक अधूरा है, जब तक उसमें हाशिए की स्त्री (दलित स्त्री) का स्वर न शामिल हो। सवर्ण स्त्रियों का संघर्ष जहाँ घर के भीतर पितृसत्ता से था, वहीं दलित स्त्री का संघर्ष जाति, वर्ग और लिंग—तीनों मोर्चों पर था।

कौशल्या बैसंत्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' हिंदी की पहली दलित स्त्री आत्मकथा मानी जाती है। इसमें उन्होंने स्पष्ट किया है कि दलित स्त्री को सवर्ण समाज का अत्याचार तो सहना ही पड़ता है, साथ ही अपने अनपढ़ और शराबी पति की मार भी खानी पड़ती है।

सुशीला टाकभौरे की 'शिकंजे का दर्द' भी इसी पीड़ा और उससे निकलकर शिक्षित होने के विमर्श को रेखांकित करती है।

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि स्त्री आत्मकथाओं ने हिंदी साहित्य में नारी विमर्श को सैद्धांतिक किताबों से निकालकर यथार्थ की खुरदरी जमीन पर ला खड़ा किया है। इन आत्मकथाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि स्त्री का जीवन

'त्याग और बलिदान' की कोई रोमांटिक गाथा नहीं है, बल्कि यह कदम-कदम पर अपनी पहचान को बचाने का एक निरंतर युद्ध है। मैत्रेयी पुष्पा, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान और रमणिका गुप्ता जैसी लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों के लिए यह संदेश दिया है कि अपने सच को स्वीकार करना और उसे समाज के सामने रखने का साहस ही स्त्री मुक्ति का पहला कदम है।

संदर्भ सूची -

1. खेतान, प्रभा - अन्या से अनन्या, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. पुष्पा, मैत्रेयी - कस्तूरी कुंडल बसै एवं गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन।
3. भंडारी, मन्नू - एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन।
4. गुप्ता, रमणिका - आपहुदरी: एक ज़िद्दी लड़की की आत्मकथा, वाग्देवी प्रकाशन।
5. बैसंत्री, कौशल्या - दोहरा अभिशाप, परमेश्वरी प्रकाशन।
6. टाकभौरे, सुशीला - शिकंजे का दर्द, वाणी प्रकाशन।
7. सिन्हा, डॉ. गीता (संपा.) - हिंदी आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श (आलोचनात्मक ग्रंथ)।
8. हंस (पत्रिका) - स्त्री विशेषांक (विभिन्न अंक)।